CH. CHARAN SINGH COLLEGE OF EDUCATION & TECHNOLOGY

Sadarpur, Meerut

ACTION RESEARCH FILE

Session 2023 - 2025

Name of Institution: उच्च प्राथमिक विद्यालय हुसैनपुर खादर

Name of Teacher: Anuradha

Class: 8th Subject: Bio Science

क्रियात्मक अनुसन्धान (Action Research)

क्रियात्मक शब्द की उत्पत्ति का श्रेय कॉलियर (Collier) को है जिसका द्वितीय विश्वयुद्ध के समय से ही प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा अनुसन्धान के सन्दर्भ में इस शब्द का प्रयोग किया था। लेकिन (Lewis) तथा उनके शिष्यों के मानवीय सम्बन्धों को बेहतर बनाने सम्बन्धी अनुसन्धान भी क्रियात्मक अनुसन्धान की पृष्ठभूमि में है। परन्तु शिक्षा के क्षेत्र में क्रियात्मक अनुसन्धान का श्रेय मुख्यतया **स्टीफे एम० कोरी (Stephen M. Corey)** को जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में इस आन्दोलन को कोरी के नेतृत्व में गति प्रदान करने में टीच कालेज, कोलम्बिया विश्वविद्यालय के होरे समन लिंकन इन्स्टीट्यूट ऑफ स्कूल एक्सपेरीमेन्टेशन का योगदान प्रमुख है।

'क्रियात्मक अनुसन्धान' शिक्षा के क्षेत्र में विद्यालयों की गतिविधियों को सुधारने तथा उन्हें एक नई दिशा प्रदान कराने के निमित्त एक महत्वपूर्ण प्रयास है। इसके द्वारा चिद्यालयों एवं उनमें कार्य करने वाले अध्यापकों, प्रधानाचार्यों तथा निरीक्षकों की कार्य–पद्धति में सुधार लाना प्रमुख उद्देश्य होता है। **कोरी** के अनुसार "क्रियात्मक अनुसन्धान वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा शिक्षाकर्मी अपनी शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं का वैज्ञानिक विधि से अध्ययन का प्रयास करते हैं, जिससे वे अपने निर्णयों एवं कार्यों का मार्गदर्शन कर सकें, उनमें सुधार कर सकें तथा उसका मूल्यांकन कर सकें।" *The progress by which practitioners attempt to study the problems scientifically in order to Guide, Currect and evaluation their decisions and actions is what number of people save called action research. - Stephen M. Coprey*

क्रियात्मक अनुसन्धान (Action Research) कई दृष्टि से मौलिक अनुसन्धान (Basic Research) से भिन्न होता है, परन्तु मुख्यतः यह नित्य की शैक्षणिक क्रियाओं में सुधार एवं विस्तार लाने का मार्ग ढूँढता है, जबकि मौलिक अनुसन्धान (Basic Research) नवीन सत्यों एवं सिद्धान्तों की स्थापना करता है। क्रियात्मक अनुसन्धान शिक्षा के व्यावहारिक पक्ष से अधिक सम्बन्धित है। इस अनुसन्धानकर्ता का विशेषज्ञ होना आवश्यक नहीं है। वह एक सामान्य शिक्षक, प्राचार्य या निरीक्षक हो सकता है।

क्रियात्मक अनुसन्धान की प्रक्रिया में अनुसन्धानकर्ता, विद्यालय की नित्य प्रतिदिन की समस्याओं; जैसे–पुस्तकालय का उचित ढंग से प्रयोग न करना, किसी विशेष कक्षा में अनुपस्थित रहना, गृह–कार्य न करना, वर्तनी में सामान्यतः गल्तियाँ करना, वचन कुशलता का अभाव, व्याकरण के पाठों में अरुचि, अन्तिम घण्टों में प्रायः भाग जाना, शिक्षकों में समय की पाबन्दी का अभाव, प्राइवेट ट्यूशन का विद्यालयों की पढ़ाई पर प्रभाव आदि का अध्ययन करता है।

क्रियात्मक अनुसन्धान प्रणाली को निम्न साधनों में कार्यान्वित किया जा सकता है–

1. समस्या को पहचानना : सर्वप्रथम विद्यालय की विभिन्न समस्याओं में से किसी एक समस्या का चयन करते है, जैसे–"विद्यालय के वाचनालय एवं पुस्तकालयों में छात्रों का न आना" एक समस्या है। इसी प्रकार की अन्य समस्याओं का चयन किया जाता है।

2. समस्या का परिभाषीकरण : समस्या को स्पष्ट करने के लिए उसे परिभाषित करते हैं जिससे उसका विशिष्ट रूप स्पष्ट हो तथा अध्ययन को निश्चित दिशा मिल सके, उपर्युक्त समस्या को यदि परिभाषित किया जायेगा तो उसका स्वरूप कुछ इस प्रकार हो सकता है, जैसे–**"विद्यालय के पुस्तकालय एवं वाचनालय का विद्यालय के कक्षा नवीं एवं दसवीं के छात्रों द्वारा संतोषजनक प्रयोग न किया जाना।"**

3. समस्या के कारणों का विश्लेषण : समस्या के कारणों के विश्लेषण के समय विभिन्न कारणों और उनके साक्षियों (evidences) का भी उल्लेख करते हैं। उपर्युक्त समस्या के कई कारण हो सकते हैं, जैसे–**पुस्तकालय में छात्रों की रुचि की पुस्तकों व पत्रिकाओं का अभाव।**

साक्षियों के अन्तर्गत हम उन प्रभावों का उल्लेख करते हैं जिनसे हमें समस्या का स्पष्ट ज्ञान होता है। यहाँ छात्रों की पुस्तकालय में बातचीत करना तथा पत्र–पत्रिकाओं की जानकारी न होना कुछ साक्षियाँ हैं।

इसी प्रकार अन्य कारणों (सम्भावित) का विश्लेषण किया जाता है।

4. क्रियात्मक उपकल्पना का निर्माण : क्रियात्मक उपकल्पना के निर्माण में इस बात का ध्यान रखा जाता है कि उपर्युक्त कारणों (जिनका विश्लेषण किया गया है) के निराकरण के लिए कौन–सी क्रिया (Action) करना उचित होगा। उसी के अनुसार उपकल्पना का निर्माण करते हैं। उदाहरणार्थ "पुस्तकालय तथा वाचनालय में छात्रों की रुचियों पर ध्यान रखते हुए अध्ययन सामग्री की व्यवस्था की जाए तो छात्र उनका प्रयोग संतोषजनक ढंग से करेंगे।"

5. उपकल्पना के परीक्षण हेतु उपयुक्त रूपरेखा का निर्माण : उपयुक्त उपकल्पना के कार्यान्वयन हेतु प्रश्नावली द्वारा छात्रों की रुचियों का पता लगाकर पुस्तकों की व्यवस्था की जायेगी तथा तीन सप्ताह बाद छात्रों की उपस्थिति तथा पुस्तकालय सम्बन्धी क्रियाकलापों का निरीक्षण किया जायेगा। सम्पूर्ण क्रियाकलापों का क्रमबद्ध विवरण भी की जाने वाली क्रियाओं, उसकी विधि तथा अपेक्षित साधनों के विवरण का उल्लेख किया जाता है।

6. उपकल्पना के सम्बन्ध में अन्तिम निर्णय तथा उसका आधार : उपर्युक्त कार्य का मूल्यांकन, निरीक्षण तथा प्रश्नावली आदि के द्वारा किया जायेगा तथा कार्यक्रम को लागू करने का सुझाव दिया जायेगा।

निर्देश : अगले पृष्ठों पर क्रियात्मक अनुसन्धान की योजना की रूपरेखा प्रस्तुत की गई है। आप अपने अनुभूत किसी शैक्षिक समस्या का चयन कीजिये तथा उसे निर्धारित शीर्षकों में प्रस्तुत करते हुए क्रियात्मक अनुसन्धान का कार्य सम्पादित कीजिये।

प्रधानाध्यापक
कम्पोजिट वि0 हुसैनपुर खादर
वि0 क्षे0 जानसठ मु0नगर

क्रियात्मक उपकल्पना सं० (1) का कार्यान्वयन

क्रियायें जो करनी हैं	विधि व समय	अपेक्षित साधन
1. गृह कार्य की माता प्राप्त करना	15 दिन तक लेखन विधि	अभ्यास पुस्तिका
2. प्रयोगिक कार्य की माहा बढ़ाना	15 दिन तक प्रयोगिक विधि	प्रकरण से सम्बन्धित क्रिया कलाप
3. समस्त गृहकार्य का पूर्ण सत में वितरण	3 दिन तक लेखन विधि	समय -सारणी के अनुसार गृह कार्य का नियोजन

क्रियात्मक उपकल्पना सं० (2) का कार्यान्वयन

क्रियायें जो करनी हैं	विधि व समय	अपेक्षित साधन
1. छात्रों को सहायक सामग्री का प्रयोग कर पढ़ना	2 माह	दृश्य -श्रव्य सामग्री के प्रयोग द्वारा
2. समय सारणी में छात्रों की अन्य रुचियों को शामिल करना	1 माह	प्रयोगों व चित्रों द्वारा समझाना
3. छात्रों को मनोवैज्ञानिक विधियों का प्रयोग कर पढ़ाना	1 माह	ह्यूमिरिस्टक विधि व अन्य विधियों का प्रयोग

विद्यालय के लिए योजना का महत्व–

गृह कार्य पूर्ण करने छात्रों के लिए व्यक्तिगत तौर पर पाठ को समझने मे सहायता प्रदान करता है। इससे विद्यालय के परीक्षाफल पर भी प्रभाव पड़ता है।

समस्या का क्षेत्र– विद्यालय मे कक्षा 8 के जीव विज्ञान विषय के शिक्षण मे मुख्य समस्या है विद्यार्थियो का गृहकार्य पूर्ण करके न लाना।

समस्या का विशिष्ट रूप–

समस्या के लिए साक्षियाँ (साक्षियाँ)	(साक्षियों के आधार)
1. उत्तर पुस्तिका घर पर रह गई	1. बदले बताना
2. छात्राओं की गृहकार्य पुस्तिका जांचने पर	2. निरीक्षण द्वारा
3. विषय अरुचिकर लगना	3. कक्षा मे ध्यान केन्द्रित न होना
4. विषय सामग्री उपलब्ध न होना	4. पुस्तक के विषय मे पूछने पर
5. मांगने पर उत्तर पुस्तिका न देना।	5. बैग की जांच करने पर

समस्या के कारणों का विश्लेषण–

1. कि केवल कुछ छात्र नहीं बल्कि कक्षा के अधिकांश छात्र इस समस्यात्मक अध्ययन के अर्तगत आते हैं।
2. कक्षा में ध्यान न देने के कारण छात्र जीव विज्ञान के प्रकरण को समझ नहीं पा रहे हैं।
3. पुस्तक का खो जाना भी एक बड़ा बहाना है।
4. छात्रों द्वारा कुंजी का प्रयोग करना भी उन्हें गृहकार्य से विमुख करता है।
5. कुछ छात्र पुस्तक के अभाव में गृहकार्य को पूरा नहीं कर पा रहे हैं।
6. बीमारी का बहाना बनाना भी प्रमुख समस्या है।

विशेष टिप्पणी– छात्र गृहकार्य के महत्व को कम जानकर इसे गम्भीरता से नहीं ले रहे हैं।

क्रियात्मक उपकल्पना का निर्माण–

उपकल्पना 1. यदि छात्रों को दिये गये गृहकार्य की मात्रा प्रारम्भ में कुछ कम कर दी जाए तो छात्र गृहकार्य पूर्ण करके लायेंगे।

उपकल्पना 2. यदि कक्षा में छात्रों का ध्यान अधिक से अधिक केन्द्रित किया जाए तो उनकी जीव विज्ञान के विषय में रुचि उत्पन्न होगी।

उपकल्पना 3. यदि छात्रों की उत्तरपुस्तिकाओं की नियमित जाँच की जाए तो वे गृहकार्य के प्रति अधिक सचेत रहेंगे।

क्रियात्मक अनुसन्धान की योजना

योजना का शीर्षक– छात्रों द्वारा गृह कार्य पूर्ण करके न लाना

योजना के कार्यान्वयन हेतु चयनित विद्यालय व कक्षा–

विद्यालय–

कक्षा– 8 **छात्र संख्या बालक/बालिका–** 35

अनुसन्धानकर्ता

नाम–

योग्यता– बी. एस. सी. (बी. एड. अध्ययनरत)

योजना की पृष्ठ–भूमि– शिक्षिका ने अपने शिक्षण के दौरान अनुभव किया कि छात्र गृहकार्य पूर्ण करके नहीं लाते हैं

योजना के अन्तर्गत प्रस्तावित अनुसन्धान का उद्देश्य–

1. छात्रों में गृहकार्य को पूर्ण करने की प्रवृत्ति उत्पन्न करना
2. छात्रों को गृहकार्य के महत्व से अवगत कराना
3. यह स्पष्ट करना कि सामाजिक विज्ञान के गृहकार्य को पूर्ण करने की प्रवृत्ति अपेक्षा ज्ञान की स्थाई बनाती है।
4. छात्रों के परीक्षा परिणाम में सुधार करना।

क्रियात्मक उपकल्पना सं० (3) का कार्यान्वयन

क्रियायें जो करनी है	विधि व समय	अपेक्षित साधन
1. शिक्षार्थिका द्वारा गृह कार्य की नियमित जाँच करना	2 महा	किसी विशेष साधन की आवश्यकता नहीं।
2. सप्ताह के एक दिन छात्रों का उपलब्धि परीक्षण करना	2महा	सभी शिक्षक अपने विषयों के सन्दर्भ में निर्णय लेंगे एक दिन निर्धारित करेंगी।
3. माता - पिता को ध्यान देने के लिए कहना	2 महा	किसी विशेष साधन की आवश्यकता नहीं
4.		

मूल्यांकन-- योजना के क्रियान्वयन के परिणामस्वरूप निम्न निष्कर्ष निकाले गये। विषय मे रुचि का न होना गृहकार्य पूर्ण न होने का प्रमुख कारण है

सभी छात्रो द्वारा कुंजी का प्रयोग करना भी इस समस्या मे वृद्धि का एक कारण है।

शिक्षिका के प्रयासो के फलस्वरूप वर्तमान मे छात्रो की गृहकार्य पूर्ण करने की प्रवृत्ति बढ़ी है।

अनुसन्धानकर्त्ता की टिप्पणी--

इस अनुसंधान के क्रियान्वयन मे अनुसंधानकर्ता ने अनुभव किया कि क्रियात्मक कल्पनाओं की सार्थकता की पुष्टि के बाद शिक्षिका अपनी त्रुटियों मे सुधार ला सकती है। गृहकार्य से सम्बन्धित समस्या को दूर कर सकती है। गृहकार्य से सम्बन्धित समस्या को दूर कर सकती है।

विभिन्न मनोवैज्ञानिक शिक्षण विधियो एवं सहायक सामग्रियों के प्रयोग द्वारा जीव विज्ञान शिक्षण को प्रभावशाली उन्नत और छात्राओं के लिए सरल बनाया जा सकता है

इन्ही प्रयासो के फलस्वरूप यह अनुसंधान सफल हुआ।

प्रधानाध्यापक
कम्पोजिट वि० [illegible]पुर खादर
वि० क्षे० जानसठ मुजफ्फरनगर